उपसंहार

नाटककार का निर्देशक

हिंदी रंगमंच में रंग-सृष्टि के महत्वपूर्ण एवं स्वतंत्र घटक के रूप में निर्देशक की उपस्थिति बहुत प्राचीन नहीं है, परन्तु वर्तमान समय में,ऐसा प्रतीत होता है कि हिंदी रंगमंच में निर्देशक की अपेक्षा अभिनेता और नाटककार गौण हो गये हैं। इस विषय को लेकर कई बार नाटककारों और निर्देशकों के बीच विवाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। हिंदी नाटक में इन दोनों के विवादों के अनेक उदाहरण सामने आते रहे हैं। यह विषय आज हमारे समक्ष महत्वपूर्ण समस्या के रूप में उभरा है, क्योंकि रंगमंच दोआयामी प्रक्रिया है, जहाँ नाटक, नाटककार, निर्देशक तथा अभिनेता के साथ-साथ मंच-प्रस्तुति के सभी घटकों का उचित संयोजन ही किसी नाट्य-प्रस्तुति की सफलता का पर्याय बनता है। इस सन्दर्भ में, कलकत्ता के प्रसिद्ध अभिनेता-निर्देशक की चर्चा करना अनिवार्य है। जालान स्वयं को 'नाटककार का निर्देशक' कह कर संबोधित करते थे, वे सदैव इस तथ्य पर विशेष ध्यान केन्द्रित करते थे कि नाटककार कृति में क्या कहना चाहता है ? उन्होंने कभी किसी भी नाट्य-कृति में आवश्यक एवं मामूली से बदलाव करने के अतिरिक्त कोई बुनियादी परिवर्तन कभी नहीं किया। उनके द्वारा किये गये प्रदर्शनों की यही विशेषता रही कि उन्होंने नाटक के मूल कथ्य को उसके वास्तविक स्वरूप में ही प्रस्तुत करने का प्रयास किया। बगैर नाटककार की जानकारी के उन्होंने कभी कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं किया।

श्यामानंद जालान कभी अपनी तरफ से नाटक की स्क्रिप्ट में अतिरिक्त कुछ भी जोड़ने के पक्ष में नहीं रहे। उन्हें कभी भी यह लगता था कि इसमें कुछ परिवर्तन की आवश्यकता है तो उन्हें लेखक से सीधे बात करना उचित लगा तथा मोहन राकेश और जालान की वार्ता का परिणाम था – 'लहरों के राजहंस' का संशोधन। श्यामानंद जालान ने 'एवं इन्द्रजीत' के प्रदर्शन से पूर्व भी बादल सरकार से लम्बी-लम्बी परिचर्चाएं कीं। कई विषयों पर उन्होंने बादल सरकार को नाटक में परिवर्तन करने के लिए तैयार कर लिया तथा कई अन्य विषयों पर स्वयं को ढाला यथा – नाटक की काव्यात्मक पंक्तियों के अनुरूप अभिनय को ढाला। निर्देशक के तौर पर सदैव नाटक के कथ्य को ईमानदारी से प्रस्तुत करना चाहते थे।

प्रारंभिक वर्षो में, सन् सत्तर तक अनामिका के तत्वाधान में जिन नाटकों का निर्देशन किया , उसमें उन्होंने बहुत अधिक परिवर्तन नहीं किया। कारण यह था कि सन् 55 के आस-पास जो शुरू किया था, रंगमंचीय दृष्टि से बिलकुल नया ही था। श्यामानंद जालान ने कलकत्ता में हिंदी रंगमंच को स्थापित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। तरुण संघ के साथ तो वे विद्यार्थी जीवन से ही जुड़ गये थे। उन्होंने अनामिका की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की तथा अनामिका से अलग होने के बाद अपनी नाट्य संस्था 'पदातिक' का निर्माण किया। अनामिका के साथ उन्होंने कई महत्वपूर्ण प्रदर्शन किये, जिनके लिए वे आज भी रंगमंच के क्षेत्र में जाने जाते हैं। यह उनके निर्देशकीय कला-कौशल का ही परिणाम था कि ज्ञानदेव अग्निहोत्री की साधारण-सी दिखने वाली रचना 'शुतुरमुर्ग' का शैलीबद्ध प्रस्तुतीकरण किया। यह प्रस्तुति अपने शैलीबद्ध अभिनय के लिए आज भी जानी जाती है। इसके अतिरिक्त कई अन्य नाटकों के सफल प्रस्तुतीकरण उन्होंने दिए। वे एक सशक्त अभिनेता भी थे, अपने ज्यादातर प्रदर्शनों में उन्होंने स्वयं अभिनय भी किया। उनके अनुसार, जिस नाटक में उन्होंने स्वयं अभिनय किया है, उस प्रस्तुति ने उन्हें ज्यादा संतुष्ट किया, परन्तु कई नाटकों में कई खामियां रह गयीं। अनामिका के साथ जालान का काम उनके द्वारा किये गये अन्य प्रदर्शनों से बेहतर माना जाता है। अनामिका की उस समय की प्रस्तुतियों ने ही इस संस्था को रंगमंच के क्षेत्र में विशेष ख्याति प्रदान की। जालान के रंगमंच पर पदार्पण से लेकर पदातिक की स्थापना तथा जीवनपर्यंत उनकी रंगयात्रा विभिन्न चरणों से गुजरी।

अनामिका की प्रस्तुतियों में मोहन राकेश के तीनों नाटक, 'शुतुरमुर्ग', 'छपते-छपते', 'घर-बाहर' आदि प्रमुख हैं। जालान ने अनामिका की स्थापना के साथ ही निर्देशन का कार्य प्रारंभ किया, इस बीच उन्होंने नाटककारों से भी संवाद स्थापित किया। कई रंग-समीक्षक मानते हैं कि अनामिका से अलग होने के बाद जालान की निर्देशकीय क्षमता में या उनके द्वारा किये गये कार्यों में, वह बात नहीं रह गयी थी जो पहले के उनके प्रदर्शनों में होती थी। अनामिका के प्रदर्शनों में पहले जैसी आकर्षित करने वाली बात अबी नहीं है। पदातिक की स्थापना के बाद उन्होंने 'गीधाड़े' तथा 'सखाराम बाइन्डर' जैसे बोल्ड नाटक उठाये। परन्तु ये मंचीय-प्रस्तुतियां दर्शकों पर अपना प्रभाव छोड़ने में सफल नहीं हो सकीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'उध्वस्त धर्मशाला' जैसे राजनैतिक विषयों से जुड़े नाटक भी किये। इसके अतिरिक्त उन्होंने

'रामकथा रामकहानी' का मंचन भी किया। जो उस समय अयोध्या जन्मभूमि की समस्या को लेकर रचा गया।

जालान ने पदातिक के लिए किये गये अपने प्रदर्शनों में बहुत ही कम नाटकों में अभिनय किया। इस दौर में उन्होंने नाटकों का निर्देशन ही मुख्यतः किया। इस दौर के उनके प्रमुख निर्देशित नाटक 'खामोश, अदालत जारी है', 'पंछी ऐसे आते हैं', 'कन्यादान', 'हजार चौरासी की माँ' आदि प्रमुख नाटक हैं। उन्होंने इन 27 -28 वर्षों में, देश-विदेश के कई विविध कथ्य एवं विविध प्रकार के नाटकों को उठाया। उनके द्वारा उठाये गये नाटकों जैसे 'छपते-छपते', 'जनता का शत्रु', 'शाकुंतलम्', तथा 'सखाराम बाइन्डर' जैसे विभिन्न विषयों के नाटकों में जीवन-दृष्टि, वर्ण्य-विषय तथा रंग-शिल्प के स्तर पर कोई समानता नहीं है। यथार्थवादी तथा अयथार्थवादी आदि शैलियों के स्थूल वर्गीकरण से हटकर कई रंग-स्रोतों से नयी एवं मौलिक उद्भावनाओं का प्रयोग कर प्रस्तुतियों को दिलचस्प, सार्थक एवं प्रभावशाली बनाया। श्यामानंद जालान अपने नाटकों की प्रस्तुति में दृश्य-बंध को लेकर भव्यता एवं विस्तार के पक्षधर थे। भव्यता, अलंकरण और यथार्थवादी नाट्य-रूपों और प्रस्तुति शैली के प्रति उनका यह आग्रह ही उनके रंगकर्म की सीमा भी है। श्यामानंद जालान को निर्देशक के रूप में, 'लहरों के राजहंस' तथा 'एवं इन्द्रजित' तथा अन्य नाटकों की प्रस्तुतियों ने उन्हें भारतीय रंगमंच के परिदृश्य पर अग्रणी निर्देशकों के रूप में पूर्णतः स्थापित कर दिया था। उनके रंगकर्म के प्रति एक बड़ा दर्शक वर्ग निरंतर उत्सुक रहता था, उन्होंने स्वयं को किसी सांचे में कैद नहीं होने दिया। जालान ने 'शुतुरमुर्ग' नाटक किया, परन्तु कलकत्ता के हिंदी दर्शकों ने इसे बहुत नहीं सराहा, पर यह प्रस्तुति भी अपनी रचनाशीलता के कारण बंगाली दर्शकों को और देश के अन्य नगरों में दर्शकों के बीच प्रशंसित हुई। पदातिक संस्था उनकी उपस्थिति में, देश-विदेश से आकर काम करने वालों के लिए आकर्षण का केंद्र रही है।

श्यामानन्द जालान असाधारण अभिनेता थे। जालान ने निर्देशन तथा अभिनय को साथ-साथ निभाया। ऐसा प्रतीत होता है कि अभिनय की शक्ति और क्षमता से उन्हें निर्देशन में विशेष सुविधा और दृष्टि मिलती रही। कला और कल्पना से अनुप्राणित होने के कारण निर्देशन और अभिनय के प्रति उनकी समान रंगदृष्टि का परिचायक है। जालान द्वारा निर्देशित-अभिनीत नाटकों की प्रशंसा और आलोचना दोनों हुईं, परन्तु उनके अभिनय का जादू निरंतर चलता रहता है। उन्होंने अभिनय से

संबंधित कोई भी शिक्षा-दीक्षा ग्रहण नहीं की। फिर भी आज रंगमंच में जब भी कोई प्रसिद्ध रंग-निर्देशकों की चर्चा करता है तो जालान का नाम स्वतः ही चला आता है। नाटककार और निर्देशकों के संबंधों की चर्चा होगी या होती है तो मोहन राकेश और श्यामानद जालान की चर्चा होना आवश्यक होता है। कुल मिलाकर, श्यामानंद जालान एक कुशल अभिनेता तथा निर्देशक थे। व्यवहारिक तौर उनके कुछ नाट्य-प्रदर्शनों में कुछ कमियां भी रह गयी थी, परन्तु उन्होंने जो भी कार्य किया; उसे पूरी निष्ठा, ईमानदारी एवं गहन परिश्रम के साथ किया।